

**पन्नीसाजी स्त्री.** (तद्.+फा.) पन्नी बनाने का कार्य, धंधा या पेशा।

**पपड़ा पुं.** (तद्.) 1. लकड़ी या दीवार का रूखा करकरा और पतला छिलका, चिप्पड़, छीलन 2. किसी वस्तु के ऊपर का पतला किंतु कड़ा-सूखा छिलका 3. रोटी का पपड़ा या छिलका 4. एक प्रकार का पकवान जो मीठा और नमकीन दोनों प्रकार का होता है इसे घी या तेल में तलकर बनाया जाता है, मीठा पपड़ा मैदा और शरबत से बनता है जबकि नमकीन बेसन को पानी में घोलकर बनता है।

**पपड़िया वि.** (तद्.) 1. पपड़ी संबंधी 2. जिसमें पपड़ी आ गई हो, पपड़ीदार **यथा-** पपड़िया कत्था, दीवार से सफेदी की पपड़ियाँ उतरना।

**पपड़ियाना अ.क्रि.** (देश.) 1. किसी वस्तु की परत का सूखकर सिकुड़ जाना 2. अत्यधिक सूख जाना **यथा-** ओठ पपड़िया जाना, सूखे से जमीन पपड़िया जाना।

**पपड़ी स्त्री.** (तद्.) 1. किसी वस्तु की ऊपरी परत, जो शुष्कता के कारण सिकुड़कर उभर जाती है 2. घाव के सूख जाने पर ऊपर की चमड़ी का ऐंठ कर परत बना जाना, घाव का खुरंड 3. वृक्ष की सूखी हुई छाल, ऊपरी परत **मुहा.** पपड़ी छोड़ना- मिट्टीकी सतह का सूखना और सिकुड़कर चटक जाना; पपड़ी पड़ना- पूरी तरह सूख जाना, रस विहीन हो जाना 4. एक प्रकार की मिठाई जिसे सोहन-पपड़ी भी कहा जाता है 5. त्वचा 6. छोटा पापड़ जो कि आटे, बेसन या दाल आदि का होता है।

**पपड़ीला वि.** (देश.) पपड़ीदार, जिसमें पपड़ी आ गई हो।

**पपनी स्त्री.** (देश.) बरौनी, पलक के बाल।

**पपरी स्त्री.** (तद्.) 1. एक ऐसा पौधा जिसकी जड़ से दवा बनाई जाती है 2. दे. पपड़ी।

**पपहिया पुं.** (देश.) दे. पपीहा।

**पपिहरा पुं.** (देश.) चातक, पपीहा।

**पपी पुं.** (तत्.) दे. पपीहा (तत्.) चंद्रमा, सूर्य।

**पपीता पुं.** (देश.) 1. एक प्रसिद्ध फल, पपाया 2. एक प्रसिद्ध फल देने वाला वृक्ष, अंडखरबूजा, वातकुंभ, मधुकर्कटी, एरंड, मेवा।

**पपील पुं.** (तद्.) चींटी, पिपीलिका।

**पपीहा पुं.** (तद्.) 1. हल्के काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो वसंत और पावस में मीठे बोल बोलता है, जो कीड़े खाता है, चातक।

**पपु वि.** (तत्.) 1. रक्षक 2. पालक **स्त्री.** धाय।

**पपैया पुं.** (देश.) 1. सीढी 2. आम की हरी गुठली के गूदे को घिसकर बनाई जाने वाली सीढी 3. आम का नया पौधा 4. दे. पपीहा।

**पपोटन स्त्री.** (देश.) 1. फोड़े आदि को पकाने के काम में लाया जाने वाला पत्ता।

**पपोटा पुं.** (तद्.) 1. पलक, आँख के ऊपर का चमड़ी का वह पर्दा जो आँख की रक्षा करता है तथा खुलता बंद होता है।

**पपोरना पुं.** (देश.) अपनी बाँहों को ऐंठकर या फुलाकर उनकी पुष्टता को निहारना, बलाभिमान प्रदर्शित करना।

**पपोलना अ.क्रि.** (देश.) 1. दंतहीन व्यक्ति द्वारा मुँह चलाना, कुछ चबाने की क्रिया करना, किसी पोपले द्वारा चुभलाना।

**पबई स्त्री.** (देश.) 1. मैना की जाति का एक पक्षी जिसकी आवाज़ या वाणी अत्यंत मधुर होती है 2. पर्वत राज हिमालय की बेटी अर्थात् पार्वती।

**पबलिक स्त्री.** (अं.) जन सामान्य, सर्वसाधारण, जनता, आम लोग **वि.** जन सामान्य सम्बन्धी, सार्वजनिक।

**पबारी स्त्री.** (देश.) नलिका नाम का गंधद्रव्य।

**पब्बय पुं.** (देश.) पर्वत, पहाड़।

**पब्लिक पुं.** (अं.) लोग, जनता, आम जनता।